इनसान की दृष्टि सीमित है!

मौलाना सैयद अबुल-आला मौदूदी (रह०)

अनुवाद

नसीम ग़ाज़ी फ़लाही

बिसमिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

"अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त दयावान और बड़ा कृपाशील है।"

इनसान की दृष्टि सीमि है!

"एक दो साल का सुन्दर-ख़ूबसूरत बच्चा बुख़ार और आँत के दर्द में मुब्तला था। उसकी तकलीफ़, पीड़ा और बेचैनी को पत्थर दिल व्यक्ति भी नहीं देख सकता था। तकलीफ़ दूर करने के लिए कभी वह अपने माँ-बाप की तरफ़ देखता और कभी डॉक्टर के सामने कड़वी-कसैली दवा के लिए मुँह खोलता। इसी तकलीफ़ में एक दिन-रात पड़े रहकर हमेशा के लिए अपने माँ-बाप से विदा हो गया। उसकी बेचैनी और तड़पती हालत को देखकर दिल में सवाल पैदा हुआ कि मेहरबान और रहम करनेवाला ख़ुदा जो बड़ा ही मेहरबान और मुहब्बत करनेवाला है, छोटे और मासूम बच्चों पर मुसीबतें और तकलीफ़ें क्यों डाल देता है? जबकि वह ख़ुद ही कहता है–

"मैं अपने बन्दों पर ज़ुल्म-अत्याचार करनेवाला नहीं हूँ।" (क़ुरआन, सूरा-50 क़ाफ़, आयत-29)

यह एक दोस्त के ख़त का एक हिस्सा है, जो सवाल उनके

दिल में पैदा हुआ है, लगभग बिलकुल वही सवाल मुख़्तलिफ़ शक्लों में हर ऐसे अवसर पर लोगों के दिलों में पैदा होता है, जब वे मौत, बीमारी और आफ़तों को आते हुए अपनी आँखों से देखते हैं। महामारी में हज़ारों लोगों का लाचारी की मौत मरना, भूकम्प में हज़ारों घरों का तबाह व बरबाद होना, सैलाब में लोगों का अनगिनत दुखों और कठिनाइयों से दोचार होना, मुख़्तलिफ़ तरह की जानलेवा बीमारियों में लोगों का न बरदाश्त होनेवाली तकलीफ़ और बेचैनी के साथ तड़पना, मतलब यह कि मुसीबत, दुख और तकलीफ़ का मंज़र इनसान के दिल में आप-से-आप यह सवाल पैदा कर देता है कि वह .ख़ुदा जो मेहरबान और रहम करनेवाला है और वह .ख़ुदा जो अपने पालनहार होने और रहम व करम पर गर्व करता है, वह .ख़ुदा जो .ख़ुद कहता है कि मैं ज़ुल्म करनेवाला नहीं हूँ, आख़िर वह अपने बन्दों पर ये कठिनाइयाँ और परेशानियाँ क्यों उतारता है? .ख़ुद अपनी ही बनाई हुई मख़लूक़ (प्राणियों) को, जिसे .ख़ुद उसी ने दुख-दर्द और पीड़ा का एहसास दिया है, इस तरह दुख-दर्द और मुसीबतों में किस लिए डालता है? कुछ लोग तो इस मसले में यहाँ तक बढ़ जाते हैं कि .ख़ुदाई-अज़ाब की इन अलामतों को .ख़ुदा के रहम व करम की ख़ूबी के ख़िलाफ़ समझने लगते हैं और उन्हें गुमान होने लगता है कि .ख़ुदा की पनाह! .ख़ुदा एक अंधी शक्ति (Blind Force) है, जिसको किसी के सुख-चैन और पीड़ा की कुछ भी जानकारी नहीं, वह

यूँ ही बिना किसी जानकारी व इल्म के बनाने और तोड़ने-फोड़ने में लगा हुआ है।

जिन लोगों ने कायनात के इन्तिज़ाम और ज़मीन व आसमान के निज़ाम को चलाने पर ग़ौर व फ़िक्र किया है, वे इस नतीजे पर पहुँचे हैं कि यह कायनात अलग-अलग मज़बूती रखनेवाले हिस्सों पर मुश्तमिल नहीं है, बल्कि वह मुकम्मल ईकाई है, जिसके सभी हिस्से एक-दूसरे के साथ तरतीब से जुड़े हैं, धरती का एक कण मंगल-ग्रह और बुध-ग्रह के कणों से वैसा ही ताल्लुक़ रखता है, जैसे मेरे सिर का एक बाल मेरे हाथ के एक रोंगटे से रखता है। मानो पूरी कायनात एक जिस्म है और उसके अंशों में एक-दूसरे से वैसा ही रब्त और ताल्लुक़ है जैसे एक शरीर के हिस्सों में होता है। फिर जिस तरह कायनात के अंशों में रब्त और निरन्तरता है, उसी तरह उन घटनाओं में भी ताल्लुक़ और निरन्तरता है जो इस कायनात में घटित होती हैं। दुनिया की कोई छोटी या बड़ी घटना बजाय .ख़ुद एक स्थायी घटना नहीं है, बल्कि वह पूरी कायनात की घटनाओं के सिलसिले की एक कड़ी है और मुकम्मल फ़ायदों और हितों के तहत घटित होती है, जिसको पेशे-नज़र रखकर सारे जहान का पालनहार .ख़ुदा अपनी असीमित सत्ता को चला रहा है। अब यह बात ग़ौर करने की है कि जिस शख़्स की नज़र पूरी कायनात पर नहीं है, बल्कि उसके एक बहुत ही मामूली हिस्से पर है जिसको कुल (सम्पूर्ण ईकाई) के साथ इतनी निसबत भी

नहीं जितनी एक ज़र्रे को सूरज के साथ होती है और जिस शख़्स के सामने दुनिया की घटनाओं का पूरा सिलसिला नहीं है, बल्कि उस सिलसिले की बेशुमार कड़ियों में से सिर्फ़ एक या दो या कुछ ही कड़ियाँ हैं और जो शख़्स कायनात के इस मामूली भाग और घटनाओं की इन कुछ कड़ियों में भी सिर्फ़ ज़ाहिरी सतह को देख रहा है, अन्दरूनी सच्चाइयों तक पहुँचने का कोई ज़रिआ उसके पास नहीं है, क्या ऐसा आदमी किसी आंशिक घटना को देखकर उसकी हिकमत और मस्लहत के बारे में कोई राय क़ायम करने के योग्य हो सकता है? और अगर वह कोई राय क़ायम करने की हिम्मत करे तो क्या उसकी राय सही हो सकती है?

कायनात का निज़ाम (व्यवस्था) और .ख़ुदा की .ख़ुदाई तो .ख़ैर इतनी ज़्यादा बड़ी है कि उसके तसव्वुर और .ख़याल ही से हमारा ज़हन थक जाता है। आप एक छोटे पैमाने पर किसी इनसानी सल्तनत ही को ले लीजिए, जो शख़्स मंत्री पद की कुर्सी या गद्दी पर बैठा हुआ एक बड़ी सल्तनत का इन्तिज़ाम कर रहा है, वह भी हालाँकि हमारी ही तरह का एक इनसान है और क़ुदरती सलाहियत की नज़र से हमारे और उसके बीच कुछ ज़्यादा फ़र्क़ नहीं है और उसके जितने मामले हैं, उनमें से कोई भी ऐसा नहीं है, जिसको समझने और अंजाम देने की ताक़त और सलाहियत हममें न हो, लेकिन सिर्फ़ यह फ़र्क़ कि वह हुकूमत की कुर्सी पर से पूरी सल्तनत की शासन-व्यवस्था

को देख रहा है और हम एक कोने में उस इन्तिज़ाम से किसी क़दर बेताल्लुक़ बैठे हुए हैं, हमारे और उसके बीच इतना बड़ा फ़र्क़ पैदा कर देता है कि हम अमली तौर पर उसके मामलों को नहीं समझ सकते और कोई आंशिक घटना हमारे सामने आती है तो हमारी समझ में नहीं आता की उसकी ज़रूरत और मस्लहत क्या है। फिर जब इनसान और इनसान के बीच सिर्फ़ पोज़ीशन के फ़र्क़ से इतना बड़ा फ़र्क़ हो जाता है, तो ग़ौर कीजिए कि इनसान और .ख़ुदा के बीच कितना बड़ा फ़र्क़ होगा, जबकि यहाँ पोज़ीशन का नहीं हक़ीक़त का अज़ीम और बड़ा फ़र्क़ है। .ख़ुदा पूरी कायनात पर हुकूमत कर रहा है और हम उसकी सल्तनत के एक बहुत ही छोटे से कोने में बैठे हैं। उसकी अक्ल, सूझ-बूझ और नज़र सारे जहान पर छाई है और हमारी समझ और अक्ल की पहुँच .ख़ुद अपने जिस्म की अन्दरूनी सच्चाइयों तक भी नहीं। अगर इस बड़े फ़र्क़ के बावजूद भी उसके कामों पर हम तनक़ीद (आलोचना) करें और उनकी हिकमतों और मस्लहतों के ताल्लुक़ से कोई राय क़ायम करें तो क्या यह तनक़ीद उस तनक़ीद से करोड़ों दर्जे जाहिलाना न होगी जो एक गँवार अपनी झोंपड़ी में बैठकर हुकूमत के मामलों में करता है।

इससे ज़्यादा साफ़ एक और मिसाल लीजिए। मान लीजिए कि आप एक बाग़बान हैं। जो बाग़ आपने बड़ी मेहनत से लगाया है और जिसके बनाने-सँवारने में आपने अपनी पूरी

महारत लगा दी है, उसके पेड़ों, पौधों और बेलों (लताओं) से यक़ीनन आपको मुहब्बत और लगाव होगा। आप उनकी सुरक्षा में कोई कसर न उठा रखेंगे। उनको बिना ज़रूरत काटना, छाँटना या उखाड़ फेंकना आप कभी भी न चाहेंगे और अगर कोई अजनबी आकर उनपर बसूला या कुदाल चलाए तो आपको सख़्त नागवार होगा। फिर साइंसी तौर पर यह भी मालूम है कि पेड़-पौधों में चैन और बेचैनी, सुख-दुख का एहसास होता है और आप जानते हैं कि अगर पेड़-पौधों पर कैंची या कुल्हाड़ी चलाई जाए तो उनको भी दुख पहुँचता है। अपने अंगों के कटने और अपने बच्चों (फलों) से जुदा होने का उन्हें दुख होता है, लेकिन इस लगाव, प्रेम और जानकारी होने के बावजूद आप ज़रूरत और बाग़ के मुकम्मल फ़ायदों का लिहाज़ करके अपने बाग़ में काट-छाँट करते हैं, पत्तियों और डालियों को काटते हैं। पौधों को चीरा लगाकर क़लमें लगाते हैं, हरियाली को काटकर बराबर करते हैं, कच्चे और पक्के फल ज़रूरत के मुताबिक़ उतार लेते हैं, खिले और बिन खिले फूल तोड़ लेते हैं, खर-पतवार जैसे पौधों को उखाड़ देते हैं, सूखे हुए पेड़ों को काट फेंकते हैं।

अगर पेड़ों, पौधों, बेल-बूटों और लताओं के नज़रिए से देखा जाए तो यह सब ज़ुल्म और अत्याचार है। अगर उनमें बोलने की ताक़त होती तो वे कहते कि यह बाग़बान कैसा ज़ालिम और बेरहम है। हमारे अंगों को काट-काटकर टुकड़े-टुकड़े

करता है, हमारे बच्चों (फलों) को हमसे छीन लेता है। छोटे-छोटे पौधों को जिन्होंने अभी ज़िन्दगी की एक बहार भी नहीं देखी थी, उखाड़ फेंकता है। नन्हीं-नन्हीं कलियों को तोड़ ले जाता है। बूढ़ों को देखता है न बच्चों और जवानों को। बस काटने से काम है और कभी-कभी तो ज़ालिम एक मशीन लेकर इस तरह फिराता है कि हमारी बिरादरी के हज़ारों पेड़-पौधों का एक ही वक़्त में सफ़ाया कर डालता है। क्या ऐसा आदमी रहमदिल और मेहरबान हो सकता है? क्या उसके दिल में मुहब्बत, लगाव और रहमदिली के पाक जज़बात हो सकते हैं? हम तो इस काट-छाँट और उखेड़-पछाड़ में कोई मस्लहत भी नहीं देखते। हमें तो यह एक अंधा, असंवेदनशील, पत्थरदिल अस्तित्व (वुजूद) मालूम होता है जो बिना किसी जानकारी, इल्म और हिकमत और ज़रूरत व मक़सद के कभी हमको पानी देता है और कभी हमपर क़ैंची चलाता है। कभी हमको खाद मुहैया कराता है और कभी हमें कुल्हाड़ी से काट फेंकता है। कभी दूसरों से हमारी हिफ़ाज़त करता है और कभी हमें ख़ुद अपने ही हाथों उखाड़ फेंकता है। कभी बीमारियों और रोगों में हमारा इलाज करता है और कभी ख़ुद एक मशीन लेकर हमारा क़त्ले-आम कर देता है।

अगर पेड़-पौधे आपके इस इन्तिज़ाम पंर नुक्ताचीनी करें तो आप क्या कहेंगे? यही न कि उनकी नज़र सीमित है, वे केवल अपने वुजूद और अपने क़रीबी आपसी ताल्लुक़ात को

देखते हैं, लेकिन मेरी नज़र कुशादा और विस्तृत है, मैं बाग़ के सारे फ़ायदों को देखता हूँ। वे केवल अपने फल-फूल, पत्तों और टहनियों से दिलचस्पी रखते हैं। बहुत बढ़े तो आसपास के पेड़-पौधों से प्रेम, लगाव और हमदर्दी के सम्बन्ध बना लिए। लेकिन मेरे सामने पूरे बाग़ की बेहतरी है और मैं सबकी हालत सुधारने के लिए काम कर रहा हूँ। हर नादान-नासमझ पेड़ और बेवकूफ़ पौधा यह समझ रहा है कि सारा बाग़ उसी की जाति और उसके दोस्तों और नातेदारों के लिए लगाया है और इस पूरे बाग़ में उसी का फ़ायदा ध्यान देने के क़ाबिल है, लेकिन मैंने अस्ल में इनको बाग़ के लिए लगाया है। इनकी जाति से मुझको जो कुछ लगाव व दिलचस्पी है अपने बाग़ के लिए है, जिस हद तक बाग़ की बेहतरी के लिए मुनासिब और ज़रूरी है मैं हर पेड़ और हर पौधे और हर बेल-बूटे की हिफ़ाज़त और पूरी देख-भाल करता हूँ। लेकिन जब बाग़ की मस्लहत माँग करती है तो मैं उसमें काट-छाँट, चीर-फाड़ और उखाड़-पछाड़ सब कुछ करता हूँ, क्योंकि बाग़ का आम फ़ायदा मेरे नज़दीक एक-एक पौधे और एक-एक पेड़ और बेल-बूटे के व्यक्तिगत हित से ज़्यादा क़ीमत रखता है। ये अन्दाज़ लगाते हैं कि मैं दुश्मनी की राह से इनपर हाथ साफ़ करता हूँ, लेकिन यह इनकी नासमझी और तंगनज़री है। इनमें यह योग्यता नहीं कि बाग़ के मामलों और उसकी मस्लहतों को समझ सकें। इनके पास सिर्फ़ अपने दुख का एहसास और अपने आराम-चैन और ज़िन्दगी की

चाहत है। जब इनकी ख़ाहिशों और एहसासों को सदमा पहुँचता है तो ये बेसब्र हो जाते हैं और मुझपर ज़ालिम होने का शुब्हा करने लगते हैं। मगर सच्चाई इनके गुमान के मातहत नहीं है। इनके समझने से मैं हक़ीक़त में ज़ालिम नहीं हो सकता और इनके लिए मैं अपने बाग़ के इन्तिज़ामी मामलों को भी नहीं बदल सकता।

इस छोटी-सी मिसाल को जब आप फैलाकर देखेंगे तो आपको अपने बहुत-से शिकवों-शिकायतों का जवाब मिल जाएगा।

कायनात के इन्तिज़ाम पर जब हम सोच-विचार करते हैं तो हमको पता चलता है कि इस अज़ीमुश्शान कारख़ाने को बनाने और चलानेवाली हक़ीक़त में एक ऐसी हस्ती होनी चाहिए जो कमाल दर्जे की हकीम (तत्वदर्शी), सब कुछ जाननेवाली और सबकी ख़बर रखनेवाली हो, जिसने हममें ख़ाहिशें पैदा की हैं मुमकिन नहीं कि वह ख़ाहिशों से बेख़बर हो। जिसने हममें एहसास (संवेदनाएँ) पैदा की हैं, मुमकिन नहीं कि वह हमारे एहसास से अनजान और नावाकिफ़ हो। जिसने बच्चे को पैदा किया है और बच्चे की परवरिश के लिए माँ-बाप के दिल में लगाव व मुहब्बत पैदा की है, वह ज़रूर जानता है कि बीमारी और मौत से बच्चे को क्या तकलीफ़ होती है और माँ-बाप के दिल को कैसा सदमा पहुँचता है, लेकिन जब यह सब कुछ जानने और हमसे ज़्यादा जानने के बावजूद उसने

बच्चे और माँ-बाप को यह तकलीफ़ देना गवारा किया, जब हमारे एहसासों (संवेदनाओं) से बाख़बर होने के बावजूद उसने उनको पामाल (पद्दलित) करना पसन्द किया, जब हमारी आरज़ुओं और .ख़ाहिशों की जानकारी के बावजूद उसने उनको पूरा करने से इनकार किया, तो हमको समझना चाहिए कि ऐसा करना यक़ीनन ज़रूरी ही होगा। और उस जानने और .ख़बर रखनेवाले .ख़ुदा के इल्म में इससे बेहतर कोई सूरत न होगी, वरना वह उस बेहतर सूरत ही को अपनाता, क्योंकि वह हिकमतवाला है और हिकमतवाले के बारे में यह गुमान नहीं किया जा सकता कि अगर बेहतर तदबीर और हल मुमकिन हो तो उसे छोड़कर .ख़राब तदबीर अपनाएगा। इसमें कोई शक नहीं कि उसकी हिकमतें हमारी समझ में नहीं आतीं और न आ सकती हैं। इसलिए कि हमारी नज़र कायनात के पूरे इन्तिज़ाम पर नहीं है, और हम नहीं जान सकते कि दुनिया के इन्तिज़ाम की मस्लहतें क्या हैं और उनके लिए किस वक़्त कौन-सी तदबीर ज़रूरी है, लेकिन अगर मुख़्तसर तौर से हम अल्लाह की हिकमत और दानाई और उसके तमाम चीज़ों का जाननेवाला होने पर सही ईमान रखते हों तो हर आफ़त के आ पड़ने पर हम समझ लेंगे कि अल्लाह की हिकमत (तत्वदर्शिता) इसी की माँग करती होगी और उसके इल्म में ऐसा ही मुनासिब होगा और हमारे लिए उसे मान लेने और राज़ी हो जाने के अलावा और कोई चारा नहीं।

फिर एक दूसरी बात जो सोच-विचार करने से हमको मालूम होती है, यह है कि जो महान हस्ती कायनात के इस निज़ाम को चला रही है, उसके पेशे-नज़र मुकम्मल भलाई है। उसके कामों में जो मामले हमको बुराई और फ़साद नज़र आते हैं उन्हें व्यक्तियों और लोगों की ओर अनुमान लगाते हुए इनको बुराइयाँ कहा जा सकता है। लेकिन सच में वे सब मुकम्मल भलाई ही के लिए हैं, और उनका वाक़े होना अस्ल में मुकम्मल भलाई को हासिल करने का इन्तिहाई ज़रूरी ज़रिआ है। अगर ये फ़साद और बुराइयाँ ज़रूरी न होतीं और इनके बिना ही मुकम्मल भलाई को हासिल करना मुमकिन होता तो हिकमतवाला और सब कुछ जाननेवाला .खुदा उनको न अपनाता और कोई दूसरी व्यवस्था का इन्तिज़ाम कर लेता। .खुद हम अपनी कमज़ोरियों और मजबूरियों के बावजूद जब गहरी नज़र से देखते हैं तो हमारी अक़्ल कहती है कि इस कायनात के लिए इससे बेहतर और अच्छा निज़ाम मुमकिन नहीं है। कोई दूसरा निज़ाम ऐसा पेश नहीं किया जा सकता जो इन आंशिक और एतिबार के क़ाबिल बुराइयों से बिलकुल ख़ाली हो, बल्कि अगर ये बुराइयाँ और आफ़तें वाक़े न हों तो हक़ीक़त में इनका न होना एक बड़ी बुराई होगी, क्योंकि वह एक आंशिक भलाई के लिए बहुत-सी भलाइयों की प्राप्ति को रोक देगी। मिसाल के तौर पर मौत ही को ले लीजिए जिसपर इनसान सबसे ज़्यादा हाहाकार करता है। एक आदमी की मौत कितने लोगों के लिए

ज़िन्दगी का रास्ता साफ़ करती है। अगर एक व्यक्ति को हमेशा ज़िन्दा रहने का सर्टीफ़िकिट दे दिया जाए तो इसके मानी ये हैं कि बहुत-से लोगों पर ज़िन्दगी का दरवाज़ा बन्द कर दिया गया। उसकी हमेशा की ज़िन्दगी अगर भलाई है तो सिर्फ़ उसी की जाति के लिए है। लेकिन मुकम्मल भलाई के लिए वह बुराई होगी। इसके बरख़िलाफ़ उस ख़ास शख़्स की मौत सिर्फ़ उसके लिए एक आंशिक बुराई है, लेकिन यही बुराई बहुत-सी आंशिक भलाइयों के हासिल होने का ज़रिआ है। रही मुकम्मल भलाई तो उस शख़्स के मर जाने से इसमें कोई ख़राबी पैदा नहीं होती, क्योंकि दुनिया के निज़ाम में उसकी मौत से कोई अड़चन नहीं आती।

इसी मिसाल पर अनुमान लगाकर आप समझ सकते हैं कि लोगों पर जितने दुख आते हैं वे सब एक एतिबार से बुराई हैं और दूसरे एतिबार से भलाई के ज़रिए और मुकम्मल भलाई के लिए उनका वाक़े होना बहुत ज़्यादा ज़रूरी है। कभी-कभी हम ख़ुद सोच-विचार करके उनके भलाई के साधन होने की दिशा को समझ लेते हैं और कभी ऐसा होता है कि तज़रिबे से हमपर साबित हो जाता है कि जिस चीज़ को हमने बुराई समझा था वह अस्ल में भलाई का सबब थी, लेकिन अगर कभी किसी बुराई में क्या भलाई छिपी है यह चीज़ समझ में न आए, तब भी हमको मुख़्तसर तौर से इस हक़ीक़त पर ईमान रखना चाहिए कि ख़ुदा जो कुछ करता है अच्छा करता है और हमारी

भलाई इसी में है कि उसके फ़ैसले के आगे सिर झुका दें, चाहे उसके काम की तह हमारी समझ में आए या न आए।

(तर्जमानुल-क़ुरआन, जून 1935 ई॰)

